ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतनाः समकालीन रचनाओं के विशेष संदर्भ में

डॉ. टी.सुमति,असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी), काकतीय शासकीय महाविद्यालय, हनुमकोंडा, तेलंगाना

सार

पर्यावरण मानव जीवन, संस्कृति तथा सभ्यता का आधार है। वर्तमान समय में औद्योगीकरण, नगरीकरण, प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन, वनों की कटाई, जल एवं वायु प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं ने पर्यावरणीय संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। ऐसी परिस्थितियों में पर्यावरण संरक्षण केवल वैज्ञानिक या प्रशासनिक विषय न होकर सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक उत्तरदायित्व का विषय बन गया है। हिंदी साहित्य ने विभिन्न कालों में प्रकृति के विविध स्वरूपों का चित्रण किया है, किंतु समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना एक सशक्त साहित्यिक विमर्श के रूप में विकसित हुई है। समकालीन कवियों, कथाकारों तथा आदिवासी साहित्यकारों ने पर्यावरणीय संकट, जल, जंगल, भूमि, जैव–विविधता, विस्थापन तथा विकास और प्रकृति के मध्य उत्पन्न असंतुलन को अपनी रचनाओं का प्रमुख विषय बनाया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना के विकास का संक्षिप्त विवेचन करते हुए समकालीन कविता, कथा साहित्य तथा आदिवासी साहित्य में पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है। साथ ही पर्यावरण संरक्षण में साहित्य की भूमिका तथा वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियों का भी विवेचन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि समकालीन हिंदी साहित्य केवल पर्यावरणीय समस्याओं का चित्रण नहीं करता, बल्कि समाज में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, संरक्षण की भावना तथा सतत विकास की चेतना विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रमुख शब्दः पर्यावरण, प्रकृति, पर्यावरण चेतना, समकालीन हिंदी साहित्य, पारिस्थितिक संतुलन, संरक्षण।

1. भूमिका

पर्यावरण समस्त जीव–जगत के अस्तित्व का मूल आधार है। जल, वायु, भूमि, वन, पर्वत, नदियाँ तथा समस्त जैविक एवं अजैविक तत्व मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं। मानव और प्रकृति का संबंध आदिकाल से परस्पर निर्भरता एवं सहअस्तित्व पर आधारित रहा है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन नहीं, बल्कि जीवनदायिनी शक्ति तथा सांस्कृतिक चेतना के रूप में स्वीकार किया गया है। प्रकृति के प्रति सम्मान, संरक्षण तथा संतुलित उपयोग की भावना भारतीय जीवन–दर्शन और साहित्यिक परंपरा में निरंतर विद्यमान रही है।

वर्तमान समय में तीव्र औद्योगीकरण, नगरीकरण, जनसंख्या वृद्धि, प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन तथा उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के कारण पर्यावरणीय संतुलन गंभीर रूप से प्रभावित हुआ है। जलवायु परिवर्तन, वनों का विनाश, जल एवं वायु प्रदूषण, जैव–विविधता का ह्रास तथा प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती घटनाएँ मानव सभ्यता के समक्ष गंभीर चुनौती बनकर उभरी हैं। इन परिस्थितियों में पर्यावरण संरक्षण केवल वैज्ञानिक या प्रशासनिक विषय नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक तथा मानवीय उत्तरदायित्व का विषय बन गया है।

हिंदी साहित्य ने प्रत्येक युग में समाज की समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक विमर्श के रूप में विकसित हुई है। समकालीन कवियों, कथाकारों तथा उपन्यासकारों ने प्रकृति के बदलते स्वरूप, पर्यावरणीय संकट, जल, जंगल और भूमि के संरक्षण, विस्थापन तथा पारिस्थितिक असंतुलन जैसे विषयों को अपनी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान दिया है। इस प्रकार समकालीन हिंदी साहित्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामाजिक जागरूकता उत्पन्न करने तथा मनुष्य और प्रकृति के मध्य संतुलित संबंध स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य करता है।

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि

विगत कुछ दशकों में पर्यावरणीय संकट वैश्विक स्तर पर गंभीर चिंता का विषय बन गया है। पृथ्वी के बढ़ते तापमान, जलवायु परिवर्तन, जल स्रोतों के क्षरण, वनों की निरंतर कटाई, प्रदूषण तथा जैव–विविधता में कमी ने मानव जीवन के साथ–साथ समस्त जीव–जगत के अस्तित्व को भी प्रभावित किया है। इन समस्याओं के समाधान के लिए केवल वैज्ञानिक प्रयास पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि समाज में पर्यावरण के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण और संरक्षण की चेतना विकसित करना भी आवश्यक है।

साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ–साथ सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम भी है। समकालीन हिंदी साहित्य में अनेक साहित्यकारों ने पर्यावरणीय संकटों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। उन्होंने विकास की वर्तमान अवधारणा के कारण उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, ग्रामीण एवं आदिवासी जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव तथा प्रकृति के संरक्षण की आवश्यकता को

साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। इन रचनाओं में पर्यावरण केवल प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक नहीं है, बल्कि जीवन, संस्कृति, सामाजिक न्याय तथा मानवीय अस्तित्व से जुड़ा एक व्यापक प्रश्न है।
यद्यपि हिंदी साहित्य में पर्यावरण संबंधी अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, तथापि समकालीन हिंदी रचनाओं में व्यक्त पर्यावरण चेतना का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन अभी भी अपेक्षित है। विशेष रूप से कविता, कहानी, उपन्यास तथा आदिवासी साहित्य में पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण का तुलनात्मक एवं समग्र मूल्यांकन शोध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन षहिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना : समकालीन रचनाओं के विशेष संदर्भ मेंष विषय का चयन किया गया है। यह अध्ययन समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना के स्वरूप, उसकी सामाजिक प्रासंगिकता तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति साहित्य की भूमिका का सम्यक् विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

2. साहित्य की समीक्षा

कॉन्सोलारो (२०१६) ने अपने अध्ययन में वैश्वीकरण के संदर्भ में हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना का विश्लेषण किया था। उन्होंने यह स्पष्ट किया था कि समकालीन हिंदी साहित्य में वृक्षों और प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण को केवल पर्यावरणीय समस्या के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संकट के रूप में भी चित्रित किया गया था। अध्ययन में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया था कि हिंदी साहित्य ने मानव और प्रकृति के बदलते संबंधों के प्रति समाज को संवेदनशील बनाने का कार्य किया था।
घिरार्दी (२०२६) ने वीरेन्द्र जैन के उपन्यासों के आधार पर पर्यावरण चेतना तथा जैन दर्शन के पारिस्थितिक दृष्टिकोण का अध्ययन किया था। उन्होंने बताया था कि साहित्य में प्रकृति के संरक्षण, जीवों के प्रति करुणा तथा अहिंसा के सिद्धांतों को पर्यावरणीय संतुलन के साथ जोड़ा गया था। अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया था कि साहित्य पर्यावरण संरक्षण के नैतिक आधार को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हुआ था।
झा ने भारतीय साहित्य और संस्कृति में पर्यावरण चेतना के विकास का अध्ययन किया था। उन्होंने यह स्पष्ट किया था कि भारतीय साहित्यिक परंपरा में पृथ्वी, जल, वन तथा प्राकृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना प्राचीन काल से विद्यमान रही थी। अध्ययन में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया था कि आधुनिक समय में भी साहित्य ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामाजिक जागरूकता उत्पन्न करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
जॉन (२०२०) ने उत्तर–औपनिवेशिक हिंदी साहित्य में पर्यावरण संबंधी विमर्श का अध्ययन किया था। उन्होंने यह विश्लेषण प्रस्तुत किया था कि औद्योगीकरण, विकास परियोजनाओं तथा प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के कारण पर्यावरण और मानव जीवन दोनों प्रभावित हुए थे। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया था कि समकालीन हिंदी साहित्य ने पर्यावरणीय संकट, विस्थापन तथा पारिस्थितिक असंतुलन जैसे विषयों को प्रभावी रूप से अभिव्यक्त किया था तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति समाज में चेतना विकसित करने का प्रयास किया था।

3. हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक हिंदी साहित्य तक प्रकृति को जीवन का आधार माना गया है। भारतीय साहित्य में पृथ्वी, जल, वायु, वन और पर्वत को केवल प्राकृतिक तत्व नहीं, बल्कि मानव जीवन के अभिन्न अंग के रूप में चित्रित किया गया है।
भक्तिकालीन कवियों जैसे कबीर, तुलसीदास और सूरदास ने प्रकृति को आध्यात्मिक अनुभूति तथा मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। रीतिकाल में प्रकृति का चित्रण मुख्यतः सौंदर्य और श्रृंगार के संदर्भ में हुआ, जबकि आधुनिक काल में सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और निराला जैसे साहित्यकारों ने प्रकृति के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।
समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना अधिक व्यापक और यथार्थपरक रूप में दिखाई देती है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, वनों की कटाई, जल प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन जैसी समस्याओं को साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान दिया है। केदारनाथ सिंह, मंगलेश डबराल, निर्मला पुतुल तथा अन्य समकालीन रचनाकारों ने प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है।

इस प्रकार हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना केवल प्रकृति–वर्णन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास तथा मनुष्य और प्रकृति के संतुलित संबंध की स्थापना का महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है।

4. समकालीन कविता में पर्यावरण चेतना

समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना एक सशक्त साहित्यिक विमर्श के रूप में विकसित हुई है। आज के कवि प्रकृति का केवल सौंदर्य–वर्णन नहीं करते, बल्कि पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, नदियों के प्रदूषण तथा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन जैसी समस्याओं को भी अपनी रचनाओं का विषय बनाते हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति और मनुष्य के बीच बिगड़ते संबंधों के प्रति चिंता तथा पर्यावरण संरक्षण का स्पष्ट संदेश मिलता है।

केदारनाथ सिंह ने अपनी कविताओं में वृक्ष, मिट्टी, जल, खेत और ग्रामीण जीवन के माध्यम से प्रकृति के महत्व को रेखांकित किया है। मंगलेश डबराल ने पहाड़ों, जंगलों और ग्रामीण परिवेश में हो रहे परिवर्तनों तथा पर्यावरणीय असंतुलन को संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। निर्मला पुतुल की कविताओं में जंगल, नदी और भूमि आदिवासी जीवन एवं संस्कृति का आधार हैं। उनकी रचनाएँ प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और जंगलों के विनाश के विरुद्ध सशक्त स्वर प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार समकालीन कविता पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन–जागरूकता उत्पन्न करने और प्रकृति के साथ संतुलित संबंध स्थापित करने की प्रेरणा देती है।

4.1 समकालीन कथा साहित्य में पर्यावरण चेतना

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में पर्यावरणीय संकट को सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। अनेक कहानीकारों और उपन्यासकारों ने औद्योगीकरण, खनन, बाँध निर्माण, नगरीकरण तथा अनियोजित विकास के कारण उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। इन रचनाओं में यह दिखाया गया है कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से केवल पर्यावरण ही नहीं, बल्कि मानव जीवन, ग्रामीण समाज और पारंपरिक जीवन–शैली भी प्रभावित होती है।

उदय प्रकाश सहित अनेक समकालीन कथाकारों ने विकास के नाम पर होने वाले विस्थापन, जंगलों की कटाई, जल स्रोतों के प्रदूषण तथा प्राकृतिक असंतुलन को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। समकालीन उपन्यासों में भी पर्यावरणीय संकट को सामाजिक न्याय, आजीविका और मानवीय अस्तित्व से जोड़कर देखा गया है। इस प्रकार कथा साहित्य पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हुए समाज में जागरूकता उत्पन्न करता है।

4.2 आदिवासी साहित्य और पर्यावरण

आदिवासी साहित्य में पर्यावरण चेतना अत्यंत स्वाभाविक और जीवन–केंद्रित रूप में दिखाई देती है। आदिवासी समाज का जीवन जंगल, नदी, पहाड़ और भूमि से गहराई से जुड़ा हुआ है। उनके लिए प्रकृति केवल संसाधन नहीं, बल्कि संस्कृति, परंपरा, आजीविका और अस्तित्व का आधार है। इसलिए आदिवासी साहित्य में प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान और संरक्षण की भावना दिखाई देती है।

समकालीन आदिवासी साहित्यकारों ने जंगलों की कटाई, खनन परियोजनाओं, बाँध निर्माण, औद्योगिक विस्तार तथा विस्थापन के कारण आदिवासी जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को प्रमुखता से चित्रित किया है। उनकी रचनाएँ यह संदेश देती हैं कि प्रकृति का संरक्षण केवल पर्यावरण की रक्षा के लिए ही नहीं, बल्कि मानव समाज के सतत विकास और सांस्कृतिक अस्तित्व के लिए भी आवश्यक है। इस प्रकार आदिवासी साहित्य पर्यावरण संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग तथा प्रकृति और मानव के सहअस्तित्व की अवधारणा को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करता है।

5. पर्यावरण संरक्षण में साहित्य की भूमिका

साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ–साथ सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम भी है। यह केवल जीवन की वास्तविकताओं का चित्रण नहीं करता, बल्कि समाज को नई दिशा और सकारात्मक सोच भी प्रदान करता है। पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि साहित्य मनुष्य में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, उत्तरदायित्व और संरक्षण की भावना विकसित करता है।

समकालीन हिंदी साहित्य में अनेक कवियों, कथाकारों और उपन्यासकारों ने पर्यावरणीय संकटों को अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यापक रूप से प्रस्तुत किया है। इन रचनाओं में वनों की कटाई, जल संकट, प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन तथा जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं के दुष्परिणामों को रेखांकित

किया गया है। साहित्य पाठकों को यह समझाने का प्रयास करता है कि प्रकृति और मानव का संबंध परस्पर निर्भरता पर आधारित है तथा पर्यावरण का संरक्षण मानव जीवन की सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। साहित्य यह संदेश भी देता है कि पृथ्वी केवल वर्तमान पीढ़ी की संपत्ति नहीं है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की अमूल्य धरोहर है। इसलिए प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग, वृक्षारोपण, जल संरक्षण तथा पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार व्यवहार प्रत्येक नागरिक का नैतिक और सामाजिक दायित्व है। इस प्रकार साहित्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन–जागरूकता उत्पन्न करने और समाज में पर्यावरणीय चेतना विकसित करने का सशक्त माध्यम सिद्ध होता है।

पर्यावरण संरक्षण की प्रमुख चुनौतियाँ

वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण के समक्ष अनेक गंभीर चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इनमें प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं–

- वनों की निरंतर कटाईः बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिक विकास और नगरीकरण के कारण वन क्षेत्रों में लगातार कमी आ रही है, जिससे जैव–विविधता और पारिस्थितिक संतुलन प्रभावित हो रहा है।
- जल एवं वायु प्रदूषणः औद्योगिक अपशिष्ट, रासायनिक पदार्थ, वाहनों से निकलने वाला धुआँ तथा घरेलू कचरा जल और वायु की गुणवत्ता को निरंतर प्रभावित कर रहे हैं।
- जलवायु परिवर्तनः पृथ्वी के बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ तथा अत्यधिक तापमान जैसी घटनाएँ जलवायु परिवर्तन के प्रमुख प्रभाव हैं, जिनका असर मानव जीवन और कृषि पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
- नदियों का प्रदूषणः घरेलू एवं औद्योगिक अपशिष्ट, रासायनिक उर्वरकों तथा प्लास्टिक कचरे के कारण नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, जिससे पेयजल और जलीय जीवन दोनों प्रभावित हो रहे हैं।
- व–विविधता का ह्रासः प्राकृतिक आवासों के विनाश तथा वनों की कटाई के कारण अनेक वनस्पति और जीव–जंतु प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर पहुँच रही हैं।
- प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहनः खनन, भूजल का अत्यधिक उपयोग तथा प्राकृतिक संसाधनों के असंतुलित दोहन से पर्यावरणीय असंतुलन निरंतर बढ़ रहा है।
- अनियोजित नगरीकरणः शहरों का अनियंत्रित विस्तार, हरित क्षेत्रों में कमी तथा बढ़ता निर्माण कार्य पर्यावरण की गुणवत्ता को प्रभावित कर रहा है।
- पर्यावरणीय शिक्षा का अभावः समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति पर्याप्त जागरूकता और शिक्षा का अभाव होने के कारण पर्यावरणीय समस्याएँ लगातार बढ़ती जा रही हैं।

इन चुनौतियों का समाधान केवल सरकारी नीतियों से संभव नहीं है, बल्कि जनसहभागिता, पर्यावरणीय शिक्षा, साहित्यिक जागरूकता तथा प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के माध्यम से ही पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्य को प्रभावी रूप से प्राप्त किया जा सकता है।

6. समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय विमर्श

समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय विमर्श एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक प्रवृत्ति के रूप में विकसित हुआ है। वर्तमान समय में बढ़ते औद्योगीकरण, नगरीकरण, प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन, वनों की कटाई, प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं ने साहित्यकारों का ध्यान पर्यावरण की ओर आकर्षित किया है। परिणामस्वरूप समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण केवल प्रकृति–वर्णन का विषय न रहकर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा नैतिक विमर्श का केंद्र बन गया है।

समकालीन कवियों, कथाकारों तथा उपन्यासकारों ने पर्यावरणीय संकट को मानव जीवन और समाज के संकट के रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं में जल, जंगल, भूमि, नदी, पर्वत तथा जैव–विविधता के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया गया है। साथ ही विकास की ऐसी अवधारणाओं की आलोचना की गई है, जिनके कारण पर्यावरणीय असंतुलन, विस्थापन तथा प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन बढ़ा है। समकालीन हिंदी साहित्य यह स्थापित करता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी नीतियों का विषय नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी है।

इस प्रकार समकालीन हिंदी साहित्य का पर्यावरणीय विमर्श प्रकृति और मनुष्य के सहअस्तित्व, सतत विकास, पर्यावरणीय न्याय तथा भावी पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य की चिंता को अभिव्यक्त करता है। यह

साहित्य समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने तथा प्रकृति के साथ संतुलित जीवन–दृष्टि अपनाने की प्रेरणा प्रदान करता है।

7. पर्यावरण और हिंदी साहित्य का अंतर्संबंध

पर्यावरण और हिंदी साहित्य का संबंध अत्यंत गहरा और अभिन्न है। साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ–साथ प्रकृति और मानव जीवन के परस्पर संबंधों का भी सजीव चित्रण करता है। भारतीय साहित्यिक परंपरा में प्रकृति को जीवन, संस्कृति और आध्यात्मिक चेतना का आधार माना गया है। इसी कारण हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों में प्रकृति का विविध रूपों में चित्रण मिलता है।

समकालीन हिंदी साहित्य में यह संबंध और अधिक व्यापक रूप में दिखाई देता है। साहित्यकारों ने प्रकृति को केवल सौंदर्य का विषय न मानकर पर्यावरणीय संकट, मानवीय संवेदना तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़कर प्रस्तुत किया है। कविता, कहानी, उपन्यास तथा आदिवासी साहित्य में प्रकृति के बदलते स्वरूप, वनों के विनाश, जल स्रोतों के प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन तथा ग्रामीण एवं आदिवासी जीवन पर पड़ने वाले पर्यावरणीय प्रभावों का यथार्थ चित्रण किया गया है।

हिंदी साहित्य पर्यावरण के प्रति समाज में जागरूकता उत्पन्न करने का प्रभावी माध्यम है। साहित्य पाठकों में प्रकृति के प्रति प्रेम, संरक्षण की भावना तथा पर्यावरणीय उत्तरदायित्व का विकास करता है। यह मनुष्य को यह संदेश देता है कि प्रकृति के बिना जीवन की कल्पना संभव नहीं है और प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग ही सतत विकास का आधार है। इस प्रकार पर्यावरण और हिंदी साहित्य का अंतर्संबंध केवल विषयगत नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना, सांस्कृतिक मूल्यों तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का भी संबंध है।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना एक सशक्त सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय विमर्श के रूप में स्थापित हुई है। हिंदी साहित्य की परंपरा में प्रकृति सदैव जीवन, संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं का अभिन्न अंग रही है, किंतु समकालीन रचनाकारों ने पर्यावरण को केवल प्रकृति–चित्रण या सौंदर्यबोध तक सीमित न रखकर उसे मानव अस्तित्व, सामाजिक न्याय, सतत विकास तथा भविष्य की पीढ़ियों की सुरक्षा से जोड़कर देखा है। समकालीन कविता, कहानी, उपन्यास तथा आदिवासी साहित्य में वनों की कटाई, जल संकट, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, विस्थापन और प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन जैसी समस्याओं का यथार्थ एवं संवेदनशील चित्रण मिलता है। केदारनाथ सिंह, मंगलेश डबराल, निर्मला पुतुल, उदय प्रकाश तथा अन्य समकालीन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रकृति के प्रति मानवीय संवेदनशीलता, पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता तथा मनुष्य और प्रकृति के सहअस्तित्व की भावना को सशक्त रूप से अभिव्यक्त किया है। विशेष रूप से आदिवासी साहित्य यह स्थापित करता है कि प्रकृति केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन, संस्कृति और अस्तित्व का आधार है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समकालीन हिंदी साहित्य पर्यावरणीय समस्याओं का केवल चित्रण ही नहीं करता, बल्कि समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता, नैतिक उत्तरदायित्व तथा सतत विकास की चेतना का भी प्रभावी संवाहक है। वर्तमान वैश्विक पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में साहित्य की यह भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए साहित्य, शिक्षा, समाज तथा शासन के समन्वित प्रयास अनिवार्य हैं।

संदर्भ सूची

1. *कंसोलारो, ए. (2016). वैश्वीकरण के दौर में मरते पेड़रू पर्यावरण, मध्यम वर्ग और उत्तरमानवीय जागरूकता। केर्वन। अंतर्राष्ट्रीय अफ्रीकी और एशियाई अध्ययन पत्रिका, (20)।*
2. *घिरार्डी, वी. (2026). दूब और पाररू वीरेंद्र जैन की रचनाओं में पारिस्थितिक चेतना और जैन नैतिकता। केर्वन, 30, 91–110।*
3. *झा, डी.सी. दबीर–08 पवित्र पृथ्वी, डिजिटल आकाशरू भारतीय साहित्य और संस्कृति में पर्यावरणीय चेतना का विकास। पर्यावरण मानविकी, 85।*
4. *जॉन, जे. (2020). विस्थापित प्रकृतिरू उत्तरऔपनिवेशिक हिंदी साहित्य और पर्यावरण (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, शिकागो विश्वविद्यालय)।*
5. *मारिया, एम.ए. (2020)। भारतीय हरित साहित्य के माध्यम से पर्यावरण जागरूकतारू अरण्यक और द हंग्री टाइड का एक पर्यावरण–आलोचनात्मक अध्ययन (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, ब्रैक विश्वविद्यालय)।*

6. चतुर्वेदी, एम., और सिंह, एस. (2022)। समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरणरू समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण। रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी, 7(3), 35—37।
7. कोचर, एस., और सिंह, आर. (संपादक)। (2026)। प्रदूषण और गरीबीरू पर्यावरणीय जातिवाद और दलित साहित्य। स्प्रिंगर नेचर।
8. शेल्टन, ए. एन. (2019)। समकालीन भारतीय अंग्रेजी कथा साहित्य में पर्यावरणीय संबंधों का अध्ययन (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, कोलोराडो विश्वविद्यालय)।
9. शर्मा, एम. (2017)। जाति और प्रकृतिरू दलित और भारतीय पर्यावरण नीतियां। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. वुइल, आर. ए. (2022)। कृष्णा सोबती के साहित्य और लेखन के काव्यशास्त्र पर विचाररू आधुनिक हिंदी साहित्य में सैद्धांतिक स्थितियाँ और साहित्यिक अभ्यास (खंड 12)। वाल्टर डी ग्रुइटर जीएमबीएच एंड कंपनी केजी।
11. मिश्रा, एस. के., और सारंगी, आई. (2017)। पर्यावरण जागरूकता में साहित्य की भूमिकारू विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय की रचना श्आरण्यकश (वन का) का इको—क्रिटिकल अध्ययन। द क्राइटेरियनरू एन इंटरनेशनल जर्नल इन इंग्लिश, 8(1), 280—287.
12. मजूमदार, ओ. (2020). अनुवाद में आधुनिक हिंदी साहित्य के बदलते महत्व की पड़ताल (डॉक्टरेट शोध—प्रबंध, बर्मिंघम विश्वविद्यालय)।
13. राधाकृष्णन, जी. वी. (2025). पर्यावरणीय चेतना को आकार देने में साहित्य की भूमिकारू आधुनिक अंग्रेजी साहित्य में इको—क्रिटिकल दृष्टिकोण। एडवांसेज इन कंज्यूमर रिसर्च, 2(1).

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY